क्या हम सब सुन्दरसाथ जागरूक हैं

—दिनेश चोपड़ा, (दिल्ली)

याद करो जो मैं कह्या मैं सब,
नींद छोड़ो जो मांगी है तब ।
याद करो धनी को स्वरूप,
श्री श्यामा जी रूप अनूप ॥

जी हां धाम में तो बहुत आसानी से एक दूसरे को हम याद दिलाते थे बार-बार कहते थे कि मैं नीद में सोई तो तू जगाईयो अगर तू सोई तो मैं जगाऊँगी और दुनियां में आकर तो हम ऐसे सोए कि अब तक सब बातें याद दिलाने पर क्या हम अभी भी नींद से जाग चुके हैं ? जरा अपने गिरेबां में हाथ डालकर तो देखें क्या हम अभी भी इस माया से, शरीरों के झगड़ों से चिपके हुए नहीं है ? बेशक हम ज्यादातर सुन्दर साथ इस नींद को पसन्द करते हैं परन्तु जब चर्चा रूपी पानी सिर पर पड़ता है तो हड़बड़ा कर उठते हैं चारों ओर देखते हैं और फिर शायद काफी दुःखी होते हैं और दम घुटने लगता हैं और बार--बार कहते हैं 'राज जी महाराज अब तो बहुत खेल देख लिया अब रहा नहीं जाता बस अब तो वापस ले चलो' परन्तु कब तक यहां प्रार्थना करते हैं या पूरे हक से कहते है। यह सब तब तक है जब तक हमारा सर गीला है होश है। जहां सिर पर पड़ा पानी सूखा कि फिर हमें शादी-ब्याह, पार्टियां, बिजनेस, नौकरी घर बार सब कुछ नजर आने लगता है जी हाँ सब कुछ।

अब शुरू हो जाता है, फिर से नींद का दौर माया का जोर। चर्चा सुनने के बाद तो हम माया को इस तरह देखते हैं जैसे दूध में पड़ी मक्खी। तो फिर बाद में ही यह जीती मक्खी निगलने का भरपूर प्रयास क्यों करते हैं आखिर क्यों हम शरीरों के झगड़ों को देखते हैं जब कि श्री जी ने फरमाया है—

जो रूहें अर्स अजीम की,
सो मिलियो लेकर प्यार ।
ए वाणी देख फजर की,
सबे हूजो खबरदार ॥

लेकिन यह खबरदारी और शायद हममें से काफी सुन्दरसाथ के लिए मात्र लिखित पंक्तियां हैं। मैं सच कहता हूं मैंने अपने सुन्दरसाथ में ही कुछ अपने धाम साथियों को देखा है शायद उन्हें एक दूसरे के साथ मिलकर बैठने में 'एलर्जी' है।

Nijanand App

अपना ही ग्रुप बना कर बैठे हुए हैं जैसे कि परमधाम के ठेकेदार तो ये खुद ही हैं और अगर कोई सच्ची बात कहता है जागनी करता है तो उस पर झूठे इल्जाम लगाये जाते हैं सब उसे लानतें देते हैं और प्रयास किया जाता है उसे मंच पर से उतारने का उसे अपने बराबर दर्जा भी नहीं दिया जाता और बैठाने का प्रयास किया जाता है उस जगह जहां बैठने के काबिल वे खुद हैं। श्री मुख वाणी की चौपाई (मेरे हिसाब से। इन पर ठीक लागू होती है कहा है—

ए हक बातून की बारीकियाँ,
सो हके दिये आवत ।
न सीखे न सिखाये न सोभतैं,
हक मेहरें से पावत ॥

यह मेहर भी उन पर ही होती है जो बात सच्ची कहते हैं सुन्दरसाथ का आदर सत्कार करतैं हैं और चलते हैं तो तलवार की धार पर और जहां भी खून की एक बूँद गिरती है वहां पर जागनी होती है नया सुन्दरसाथ बनता है और तारतम दिया जाता है। परन्तु ग्रुपवासियों को तो डर है अपनी शान का अपनी गद्दी का और फिर यह दावा किया जाता है कि हम ब्रह्मसृष्टियां हैं लेकिन देखा जाए तो यहां वही दुनियावी गुण आ जाते हैं जो हम रोजमर्रा की जिन्दगी में देखते हैं। फिर भी यह दावा कि हम जागरूक हैं। मैंने ऐसे साथियों को भी देखा है कि तन, मन, धन से सुन्दरसाथ की सेवा की लेकिन अपने जरा से नश्वर अहं ने उन्हें वहां लाकर खड़ा कर दिया जहां वे अपने माटी के पुतले की इज्जत का सवाल खड़ा करते है क्या उस समय वे अपने सुन्दरसाथ श्री राज जी की इज्जत को भूल जाते हैं वे उस समय आत्मिक नाते को न देखकर शारीरिक नातों को क्यों देखते हैं ? क्या उस समय उन्हें सुन्दरसाथ न नजर आकर दुनियावी लोग नजर आते हैं ? ये सब कैसी बातें हैं सच मुझे कुछ समझ में नहीं आता ।

हम सब सुन्दर साथ भजनों द्वारा चर्चा द्वारा एक दूसरे को जगाने का पूरा प्रयास करते हैं और सुनने के बाद क्या हम सब सुन्दरसाथ से एक जैसा वर्ताव करते हैं ? मुझे कहने की जरूरत नही अगर अपने दिल में झाँके तो उत्तर मिल जायेगा । कई बार तो शायद हम एक दूसरे के पास इसलिए नहीं बैठते क्योंकि हमें दूसरे साथी में 'कोई खास बात' नजर नहीं आतीं वो हमारे पास आता है तो हम दूर भागने की चेष्टा करतें हैं। तब हम उसके भावों को क्यों नहीं पढ़ने की कोशिश करते क्यों हम एक दूसरे के अवगुणों को देखते रहते है जबकि हमारे प्रणामी समाज में सब को बराबर का दर्जा दिया जाता है। क्यों हम अपने आप को औरों से श्रेष्ठ समझते हैं जब कि यह बात सोचना ही हमारी निम्नता और गिरावट

Nijanand App

है। कभी तो ऐसी कटु बातें देखने व सुनने में आती हैं कि मेरा तो अपने सिर के बाल नोच लेने को दिल चाहता है ।

रात दिन हम सुन्दरसाथ तड़पते और कहते हैं ।

क्यों रे विछोहा दुल्हा,
छूटी हक खिलवत ।
हम अरवाहें जो अर्स की,
फेर कब देखें हक सूरत ॥

मुझे लगता है व्यर्थ ही यह चौपाई बोलते हैं क्योंकि शायद ही हम इस चौपाई के अर्थ को समझते हैं हक सूरत तो हमारे पास अब भी हैं जी हां अव भी और हम देखते हुए भी अनजान रहते हैं। यह हक सूरत हमारे सामने इस दुनियां में प्रिय सुन्दरसाथ के रूप में है परन्तु हम देखें तब तो बात भी है हमने तो शायद चौपाइयां रटना व उन्हें बोलना ही अपना ध्येय बना लिया है। इतना बड़ा ज्ञान सुन्दरुसाथ का नाता, अपने निज घर की बातें व परमधाम के सुखों का वर्णन सुन लेने के बाद भी हम जागरूक क्यों नहीं हैं क्यों हम वजूदों में घिरे पड़े हैं।

आखिर क्यों ! क्यों ! क्यों !

—०—

स्थान की शोभा

वतर्ज-दिल के अरमां आंसुओं में बह गये

क्या बतायें नूरी दर की दास्तां
हो रहे हैं चर्चेवाहेदत के जहां

जिस पे हो जाये प्रभू की इक नजर
मस्त वो हो अलमस्त रहते हैं वशर
लब पे रहता है सदा हक का बयां–१

जिस तरफ देखो उधर ही प्यार है
भजन बन्दगी और धर्म प्रचार है
पी रहे हैं बानी का सब रस यहां–२

रात दिन जिक्रकर श्री निज धाम का
महेर के सागर का श्री निज नाम का
दर हकीकत श्री जी साहबहैं मेहरवां–३

छोड़ के सब मोहो माया की लगन
हो गई श्री जी के चरणों में मगन
दूर सब झंझट हुए यारो यहां–४

यहे हकीकी रतन का दरवार है
आंख वालों को होता दीदार है
दर यह केवल छोड़ के जएं कहां–५

रचयिता—
श्री राधाकृष्ण सिडाना
(चण्डीगढ़)

Nijanand App